

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 17, यूहन्ना 15:1-16:15

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, विदाई प्रवचन, मसीह में बने रहना और दुनिया के प्रति गवाही देना। यूहन्ना 15:1-16:15.

नमस्ते, हम यीशु के विदाई प्रवचन का अध्ययन कर रहे हैं, और अब तक हमने अध्याय 13 और 14 को देखा है, यहाँ यीशु के विचार के प्रवाह में आने की कोशिश कर रहे हैं। शिष्यों के पैर धोने के बाद, वह उन्हें उनके साथ अपनी निरंतर उपस्थिति के बारे में सिखाना शुरू करते हैं, जो इस तथ्य के बावजूद सच होगा कि वह आध्यात्मिक रूप से उनसे अनुपस्थित हैं। इसलिए, उदाहरण के तौर पर, उन्हें अध्याय 13 में एक-दूसरे के विनम्र सेवक बनने की शिक्षा देने के बाद, वह उन्हें अध्याय 14 में आने वाली आत्मा के बारे में सिखाते हैं जो उनके साथ अपनी उपस्थिति को बदल देगी।

इसलिए, वह यह स्पष्ट करता है कि वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ रहा है, वह उन्हें आत्मा के पास छोड़ रहा है जो उन्हें उसके और पिता के साथ संगति जारी रखने और उसकी शिक्षा को जानने में सक्षम बनाएगा। ध्यान रखें, यह विहित धर्मग्रंथों के आने से पहले की बात है, यहाँ तक कि विहित नए नियम का, मुझे कहना चाहिए, उत्पादन शुरू हो चुका था। इसलिए, ऐसा नहीं था कि वे यह जानने के लिए बाइबल की ओर दौड़ सकते थे कि यीशु ने इस बिंदु पर क्या कहा था।

यीशु ने जो कहा था उसे याद दिलाने के लिए वे पूरी तरह से पवित्र आत्मा पर निर्भर थे। मैं यह मानता हूँ कि हममें से जो लोग अपना अधिकांश जीवन बाइबल में बिताते हैं, हममें से कुछ लोग ईश्वर से प्राप्त अपनी बुलाहट के हिस्से के रूप में, फिर भी खुद को याद दिलाना चाहिए कि जब हम धर्मग्रंथ के शब्दों को देखते हैं, तो हमें निर्भर होने की आवश्यकता होती है ईश्वर की आत्मा पर जो वास्तव में हमें वे धर्मग्रंथ देने में शामिल था, आरंभ करने के लिए जिस तरह से वह उस प्रेरित समूह के साथ आगे बढ़ा जिसने हमें धर्मग्रंथ दिए। इसलिए, पिछली बार अध्याय 14 को देखने के बाद, अब हम अध्याय 15 में जा रहे हैं, और विदाई प्रवचन की एक सटीक रूपरेखा देना मुश्किल है।

हम एक तरह से विचार के प्रवाह का अनुसरण करते हैं। अध्याय 14 यीशु के सवालों के जवाब देने और उन सवालों के आधार पर स्पर्शरेखाओं पर बात करने के साथ संवादात्मक था। अध्याय 15 शिष्यों की ओर से बिना किसी रुकावट या हस्तक्षेप के यीशु की कुछ अधिक प्रत्यक्ष शिक्षा है।

और मुझे लगता है कि इसे एक ऐसे पाठ के रूप में लेना दिलचस्प है जो उनकी जिम्मेदारी पर जोर देता है। उसने उनसे उस तरीके के बारे में बात की है जिससे वे आत्मा प्राप्त करेंगे, और आत्मा उनका शिक्षक होगा और उनके साथ अपनी उपस्थिति बनाए रखेगा। लेकिन उन्हें इस सब को एक बहाने के रूप में नहीं लेना चाहिए और बस बैठ कर ऐसा होने का इंतजार नहीं करना चाहिए।

उनके पास करने के लिए भी एक काम है और उनके काम को शेष या स्थायी कहा जाता है। और निःसंदेह, हमारे पास यहां अध्याय 15 में यह सुंदर सादृश्य है, जैसा कि हमारे पास अच्छे चरवाहे यीशु के अध्याय 10 में था। यहाँ हमारे पास अध्याय 15 में यीशु सच्ची लता के रूप में है।

तो, आइए पहले गद्यांश के कथा प्रवाह को देखें, और फिर जैसा कि हमने पहले किया है, हम अध्याय में कुछ महत्वपूर्ण चीजों को देखने और उन पर बेहतर नियंत्रण पाने का प्रयास करेंगे। सबसे पहले, हम उस कथा प्रवाह को देखते हैं जो हमारे पास है, यह आलंकारिक प्रवचन। मैं इसे यहां रूपक कह रहा हूँ।

जिसे हम दृष्टांत या रूपक कह सकते हैं, मैं उसके बीच कोई तकनीकी अंतर नहीं करता। ये दोनों वे शब्द हैं जिनका हम उपयोग करते हैं। ये विस्तारित उपमाएँ, विस्तारित उपमाएँ और विस्तारित रूपक हैं जो एक साधारण कथन से आगे बढ़कर विवरण में कल्पना का विस्तार करते हैं।

तो, हमारे पास यीशु हैं जो बेल और शाखाओं के बारे में बात कर रहे हैं, और कैसे पिता किसान हैं, यीशु बेल हैं, और शिष्य शाखाएँ हैं। शाखाओं पर फल लगाने की उम्मीद है। किसान शाखाओं की छँटाई करेगा ताकि उन पर अधिक फल लगें।

जो शाखाएँ फल देने के लिए किसान के मार्गदर्शन का पालन नहीं करती हैं उन्हें काट दिया जाता है और जला दिया जाता है, और जो शाखाएँ फल देती हैं वे आशा करती हैं कि वे ऐसा करना जारी रखेंगी और अधिक फल देंगी। तो, यीशु अपने और शिष्यों के बीच यह सादृश्य बना रहे हैं। ऐसा लगता है कि 15:9-17 में, जो एक अर्थ में बेल और शाखाओं के रूपक को पीछे छोड़ देता है, वापस जाने और नई आज्ञा शिक्षण को लेने के लिए।

तो, 15:9-17 में बहुत कुछ है जो प्रेम आदेश को दोहराता है और प्रासंगिक बनाता है, लेकिन ऐसा बेल और शाखाओं के रूपक की कल्पना का उपयोग करके किया जाता है जो अभी दिया गया है। तो, आप 15:9-17 में प्रेम में बने रहने और प्रेम करके फल उत्पन्न करने के बारे में जोर पाते हैं, और प्रेम करना और एक साथ आज्ञापालन करना ऐसे तरीके हैं जिनसे हम परमेश्वर के लिए फल उत्पन्न करते हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि जब हम बेल होने, शाखाएं होने के बारे में इस रूपक को पढ़ते हैं तो मुख्य प्रश्नों में से एक हमारे पास होता है, मुझे कहना चाहिए, यीशु बेल है, क्या हमें आश्चर्य होता है कि हम कैसे बने रहते हैं, और मुझे लगता है कि छंद 9-17 मूल रूप से हमें यह बताएं और समझाएं कि उस अर्थ में बने रहने का क्या मतलब है।

इसलिए, यीशु की अनुपस्थिति में, वह शिष्यों के साथ अपनी उपस्थिति बनाए रखने के लिए आत्मा को भेजता है, और फिर उनसे अपेक्षा करता है कि वे उसके साथ रहें, और इसका इतना महत्वपूर्ण कारण यह है कि विरोध होगा। इसलिए, बेल में बने रहने की आवश्यकता के मामले पर चर्चा करने के बाद, यीशु श्लोक 18-25 में दुनिया की नफरत के बारे में बहुत यथार्थवादी ढंग से बोलते हैं। वह कहते हैं, 'अगर दुनिया आपसे नफरत करती है तो हैरान मत होइए क्योंकि वह मुझसे भी नफरत करती है और ऐसा नहीं है कि उनके पास व्यक्तिगत रूप से आपके खिलाफ

कुछ है, उन्हें मेरा संदेश पसंद नहीं है, और अगर आप मेरे लिए खड़े होते हैं, तो आप मुझे उसी प्रकार का उपचार मिलेगा जो मुझे मिला।

तो, आपको इस नकारात्मकता और विपरीत दिशा में बहती हवा के प्रकाश में और अधिक मुझमें बने रहने की आवश्यकता होगी। आपको कुछ घर्षण प्राप्त होगा और आपको दुनिया में कुछ विरोध का सामना करना पड़ेगा, और यीशु अध्याय 15 के अंतिम भाग में इसके बारे में बहुत यथार्थवादी और स्पष्ट रूप से बोलते हैं। अध्याय 15 के अंत में, वह उस तरीके के बारे में बोलते हैं जिसमें पवित्र आत्मा विरोध के इस समय में शिष्यों की मदद करने और उन्हें अधिक प्रभावी गवाही देने में सक्षम बनाने के लिए उनके पास आता है।

इसलिए, मुझे लगता है, यह ध्यान देना काफी महत्वपूर्ण है कि यीशु 15:26 और 27 में कहते हैं कि आत्मा मेरे बारे में गवाही देगा और आप भी गवाही देंगे। शायद हमें ईसाई गवाही के बारे में आम तौर पर सोचने की तुलना में थोड़ा अलग तरीके से सोचना चाहिए, कि यह सब हमारे ऊपर निर्भर है और हम इसे करते हैं, और वैसे, पवित्र आत्मा आती है और हमारी मदद करती है। शायद हमें इसके बारे में सोचना चाहिए क्योंकि पवित्र आत्मा गवाही दे रहा है और हम साथ आते हैं और पवित्र आत्मा की मदद करते हैं क्योंकि अध्याय 15 के अंत में यीशु पवित्र आत्मा के कार्य को प्राथमिकता देते हैं।

तो, इस तरह जॉन 15 और 16 का विकास होता है। हम यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि कैसे अध्याय 16 विरोध के बारे में अधिक से अधिक बात करके शुरू होता है, किस तरह से पवित्र आत्मा ही वह है जो शिष्यों को विरोध से निपटने में सक्षम बनाएगा। तो, पाठ में 15:18 से 25 तक उत्पीड़न और कठिनाई के बारे में बारी-बारी से बदलाव किया गया है, फिर आत्मा का संदर्भ दिया गया है जो शिष्यों को इससे निपटने में सक्षम बनाता है, फिर दुनिया की नफरत के बारे में जो पहले ही कहा जा चुका है उसे दोहराता है और उत्पीड़न जो इससे संबंधित है, लेकिन उस चेतावनी के बाद एक बार फिर, पवित्र आत्मा के मंत्रालय का संदर्भ मिलता है।

तो पाठ, बेल और शाखाओं के रूपक और उसकी व्याख्या से गुजरने के बाद, एक ऐसा पाठ बन जाता है जो विरोध की वास्तविकता और उस वरदान के बारे में बोलता है जो हमें प्राप्त होने वाले विरोध से निपटने के लिए आत्मा के माध्यम से प्राप्त होता है और उस आत्मविश्वास के बारे में बताता है कि हम कर सकते हैं। यह जान लें कि नरक की सभी ताकतें हमारे विरुद्ध निर्देशित होने के बावजूद अगर हम इसके बारे में काव्यात्मक होना चाहते हैं, तो पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से स्वर्ग की सभी ताकतें अभी भी हमारे पक्ष में हैं। तो, आइए फिर वापस जाएं और यहां जॉन 15 में व्याख्या के लिए कुछ मामलों के बारे में सोचें। मैं सबसे पहले बाइबल में अंगूर के बाग की भूमिका के बारे में सोचना चाहता हूं और यह हमें यह समझने में कैसे मदद करता है कि यीशु यहां किस बारे में बात कर रहे हैं।

हम जॉन अध्याय 15, श्लोक 1 में खुद को याद दिलाते हैं, कि यीशु ने कहा था, मैं सच्ची बेल हूं, और मुझे लगता है कि वह सच शब्द का उपयोग कर रहा है क्योंकि जब हम पूरे हिब्रू बाइबिल में बेल की कल्पना को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि कई हैं ऐसे समय में जब इज़राइल को भगवान की बेल के रूप में वर्णित किया जाता है और इज़राइल के लिए भगवान का संभावित आशीर्वाद

और उनके प्रति उसका वाचा प्रेम, दुर्भाग्य से, हमेशा अंगूर की भरपूर फसल नहीं देता है। अक्सर परिणाम ठीक इसके विपरीत होता है। इसलिए, इज़राइल हमेशा ईश्वर के लिए भरपूर फसल साबित नहीं होता है।

और इसलिए, यीशु अब कह रहे हैं, मैं सच्ची बेल हूँ। वह कहते दिख रहे हैं कि मैं सच्चा इज़राइल हूँ। मैं उन सभी सद्गुणों और सभी फल देने वालों का प्रतीक हूँ जो मूल रूप से इज़राइल द्वारा उत्पादित किए जाने चाहिए थे।

तो, यहाँ शायद एक कॉर्पोरेट व्यक्तित्व की छवि है जिसका उपयोग यीशु यह कहने के लिए कर रहे हैं कि मैं, मुझमें, ईश्वर के लोग भाग्य, फल, विशेषताएँ, दुनिया के लिए आशीर्वाद पाएंगे जो ईश्वर ने मूल रूप से चाहा था इज़राइल। लेकिन निःसंदेह, यह केवल यीशु नहीं है क्योंकि वह कहता है, मैं दाखलता हूँ। वह कहता है तुम मेरी शाखाएँ हो।

तो, सच्ची बेल के रूप में यीशु और उसकी शाखाओं के रूप में हम के माध्यम से, पृथ्वी पर ईश्वर के लोगों के रूप में इज़राइल के लिए दिव्य उद्देश्य पूरा होने जा रहा है। तो, आइए वापस जाएँ और पुराने नियम के इन अंशों में से कुछ के बारे में सोचें। हम इसे उत्पत्ति अध्याय 9 की कथा में अनुसरण कर सकते हैं जहाँ नूह एक अंगूर के बगीचे का रक्षक बन जाता है।

और उससे कुछ कठिनाइयाँ होती हैं क्योंकि नूह कुछ ज्यादा ही नशा कर लेता है और परिणाम अच्छा नहीं होता। शराब के बारे में टोरा के बाकी हिस्सों में हमारे पास कई अन्य ग्रंथ हैं। हमने यहां उनमें से कुछ का ही उल्लेख किया है।

और अनिवार्य रूप से शराब एक ऐसी चीज़ हो सकती है जो लोगों के जीवन और सामान्य कृषि चक्र के हिस्से में भगवान का आशीर्वाद दिखाएगी। और जैसे इस्राएली अनाज काटते थे, अंजीर काटते थे, और अन्य सब वस्तुओं की फसल काटते थे, वैसे ही वे अंगूर भी काटते थे। वे उन सभी को खाने में सक्षम नहीं होंगे और इसलिए वे अंगूरों को शराब के रूप में संरक्षित करके रखेंगे।

वे शराब लेते थे, और इसे खाल में डालते थे, जैसा कि हम सिनोट्रिक गॉस्पेल से जानते हैं, और यह स्वाभाविक रूप से किण्वित हो जाएगा ताकि यह गैर-अल्कोहल न रहे। यह एक मादक पेय बन जाएगा। आमतौर पर, इसका उपयोग भोजन के समय पानी में मिलाकर पीने के लिए किया जाता है।

और इसलिए, हमारे पास कई ग्रंथ हैं जो शराब और पानी के मिश्रण के बारे में बताते हैं। आपको याद होगा कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक में कुछ पाठ हैं जो भगवान के क्रोध के बारे में बात करते हैं क्योंकि भगवान अपने क्रोध के प्याले में बिना मिश्रित शराब मिलाते हैं। इसलिए बिना मिश्रित शराब पीना एक प्रकार की बर्बरतापूर्ण बात थी, और उस समय केवल बर्बर लोग ही ऐसा करते थे।

और फिर शराब के रूप में परमेश्वर के पूर्ण क्रोध के बारे में बात करना यह कहना होगा कि वह इसे पानी के साथ भी नहीं मिलाएगा। वह इसे अपने पूरे क्रोध के साथ प्रकट करने जा रहा है। तो,

हमारे पास भविष्यवक्ताओं में ऐसे ग्रंथ हैं जो इज़राइल को भगवान के अंगूर के बगीचे के रूप में बताते हैं।

यशायाह अध्याय 2 और शायद एक केंद्रीय पाठ जो नए नियम के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है वह यशायाह अध्याय 5, छंद 1 से 7 है। तो, आइए वापस जाएं और उस पर संक्षेप में नज़र डालें। यशायाह 5, श्लोक 1 से 7 में, दाख की बारी का एक सुंदर गीत है। 5-1, मैं अपने प्रिय के लिये उसके अंगूर के बगीचे के विषय में गीत गाऊंगा।

मेरे प्रियजन का उपजाऊ पहाड़ी पर एक अंगूर का बगीचा था। उसने उसे खोदा और उसमें से पत्थर साफ किए, उसमें सबसे अच्छी लताएँ लगाई, उसमें एक प्रहरीदुर्ग बनाया, एक शराब का कुंड भी काटा, और अच्छे अंगूरों की फसल की तलाश की। तो, इस बिंदु पर सब कुछ ठीक-ठाक है।

यह एक सुंदर देहाती दृश्य है जहां एक व्यक्ति ने एक ऊबड़-खाबड़ इलाके में जाकर एक सुंदर खेत और एक सुंदर अंगूर का बाग बनाया है, और भरपूर फसल सुनिश्चित करने के लिए सब कुछ व्यवस्थित किया गया है। तो, यह ऐसा ही है जैसे कि आप जहां रहते हैं, वहां आप गर्मियों के बीच में ग्रामीण इलाकों में जा सकते हैं और यदि आप चाहें तो कटाई के लिए तैयार खेतों को देख सकते हैं, और सब कुछ अच्छा दिखता है और यह आपको एक अच्छा एहसास देता है और आप जिस तरह से उन्होंने मानवता को फसलों से आशीर्वाद दिया है, उसके लिए भगवान को धन्यवाद दें। तो यह यहां पद 2 के मध्य तक एक सुंदर छवि है, लेकिन जैसा कि आप शायद पहले से ही जानते हैं, पद 2 के मध्य में चीजें खराब हो जाती हैं। उसने अच्छे अंगूरों की फसल की तलाश की, लेकिन इससे केवल खराब फल निकला।

तो, यह कुछ हद तक विडंबनापूर्ण है। प्रिय ने अंगूर के बगीचे के लिए जो अद्भुत चीजें की हैं, उनके बाद, आप जो उम्मीद करते हैं वह एक भरपूर फसल होगी, लेकिन आपको वह नहीं मिलता जिसकी आप उम्मीद करते हैं। उसी प्रकार की बात हम उस तरीके से सादृश्य बना सकते हैं जिस तरह से जॉन 1 यीशु के बारे में बात करता है।

दुनिया की रचना करने और दुनिया को आशीर्वाद देने और दुनिया में रोशनी भेजने के बाद, वह अपने आप में आ गया और खुली बांहों से उसका स्वागत करने के बजाय, उसके अपनों ने उसे एक तरफ धकेल दिया। वे उसे नहीं चाहते थे। यह कैसी विडम्बना है? कितना अप्रत्याशित? ऐसा कैसे हो सकता है? तो, श्लोक 1 से 5 में कहानी बताने के बाद, क्षमा करें, यशायाह 5 में श्लोक 1 और 2, श्लोक 3 फिर कहानी को लागू करता है।

अब हे यरूशलेम के रहनेवालों, हे यहूदा के लोगो, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो। मैं अपने अंगूर के बगीचे के लिए इससे अधिक और क्या कर सकता था जो मैंने इसके लिए किया है? जब मैं अच्छे अंगूरों की तलाश में था, तो खराब अंगूर ही क्यों मिले? अब मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ कि मैं अपने अंगूर के बगीचे के साथ क्या करने जा रहा हूँ। तो, श्लोक 3 और 4 में न्याय के लिए एक तरह की अपील है, और फिर फैसला उस एकमात्र चीज़ के बारे में आता है जो इस तरह के अंगूर के बगीचे के साथ किया जा सकता है।

मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं अपने अंगूर के बगीचे के साथ क्या करने जा रहा हूँ, पद 5। मैं उसकी बाड़ हटा दूंगा और वह नष्ट हो जाएगा। मैं इसकी दीवार तोड़ दूंगा और यह रौंद दिया जायेगा। मैं इसे बंजर भूमि बना दूंगा, न तो इसे काटा जाएगा और न ही इसमें खेती की जाएगी।

वहाँ झाड़ियाँ और काँटे उगेंगे। मैं बादलों को आज्ञा दूंगा कि वे उस पर न बरसें। यह सब, फिर से, एक बहुत ही ज्वलंत तस्वीर है कि भगवान, अंगूर के बगीचे का मालिक, क्या करने जा रहा है।

लेकिन अंगूर के बगीचे की इस सारी कल्पना का क्या मतलब है? श्लोक 7 इसे डालता है, सभी कल्पना, रूपक और विवरण लेता है, और इसे एक प्रस्तावक कथन में बदल देता है।

सर्वशक्तिमान यहोवा की दाख की बारी इस्राएल जाति है। और यहूदा के लोग उन दाखलताओं के समान हैं जिनसे वह प्रसन्न होता था, और उन्होंने न्याय की आशा की, परन्तु धर्म के बदले में रक्तपात देखा, और संकट की चिल्लाहट सुनी।

इसलिए, हमारा जोर इस बात पर है कि चीजें उस तरह से नहीं हुई, जैसी होनी चाहिए थीं। इसलिए, परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को जो वाचा का प्रेम दिखाया, और जो आशीषें उन्हें दीं, उसके बाद भी उन्होंने उसकी वाचा की शर्तों, उनके जीवन के लिए उसकी इच्छा, मूसा के कानून का जवाब नहीं दिया, और इसलिए कुछ भी नहीं था उन पर निर्णय सुनाने के अलावा और क्या करना बाकी है। तो, हमारे पास पुराने नियम का इतिहास है जिसमें इज़राइल और यहूदा का राज्य विभाजित हो गया, और भगवान ने अशूरियों द्वारा इज़राइल और बेबीलोनियों द्वारा यहूदा का न्याय किया।

और आपके पास 2 इतिहास 36 जैसे पाठ हैं जो अनिवार्य रूप से ईश्वर और इज़राइल पर विलाप करते हैं और कहते हैं कि ईश्वर उनके लिए इससे अधिक क्या कर सकता था? उन्होंने उसके दूतों की बात नहीं मानी, उन्होंने उसके नबियों को पथरवाह किया। भगवान क्या करने जा रहे थे? वह केवल निर्णय भेज सकता था। तो, इस तरह के ग्रंथों में अंगूर के बगीचे की कल्पना बहुत दुखद है।

यदि हम यशायाह, यिर्मयाह और यहेजकेल को आगे देखें, तो हमें ऐसा करने में समय नहीं लगेगा, आप इन ग्रंथों का अनुसरण कर सकते हैं, लेकिन आप देखेंगे कि कभी-कभी इसराइल का अकाल पड़ता है, अर्थात्, ईश्वर जो निर्णय देता है उन पर और परमेश्वर के ज्ञान की कमी, भूमि में भोजन और पेय की कमी, कृषि उपज की कमी से भी दिखाई देती है। इसलिए इन ग्रंथों में दाख की बारी की कल्पना को अक्सर निर्णय की छवि के रूप में उपयोग किया जाता है। लेकिन इसका उपयोग आशीर्वाद की छवि के रूप में भी किया जाता है।

अगर इज़राइल पश्चाताप करता है, तो उन्हें एक बार फिर बंपर फसल मिलेगी। उनके पास बहुत से अंगूर होंगे, उनके पास बहुत सारा दाखमधु होगा, और परमेश्वर उनमें से नया दाखरस प्रवाहित करेगा। और इसलिए, शराब की कमी भगवान के आशीर्वाद की अनुपस्थिति का संकेत है।

शराब की मौजूदगी इस बात का संकेत है कि इज़राइल भगवान के साथ सही है, और भगवान उन्हें अपनी सारी प्रेमपूर्ण दयालुता से आशीर्वाद दे रहे हैं। तो फिर जब हम नए नियम पर आते हैं,

तो हम नए नियम और यीशु की शिक्षा को इसी पर आधारित पाते हैं। तो, हम मैथ्यू अध्याय 20 में अंगूर के बाग के दृष्टांत पाते हैं, मैथ्यू 21:28 में अंगूर के बाग का दृष्टांत, मैथ्यू 21:23 में किरायेदार किसानों का दृष्टांत जो मालिक को उचित रूप से फल नहीं लौटाते हैं।

यीशु दाख के फल के बारे में बात करते हैं जब वह फसल के भोजन में इसे पीते हैं और वह प्रभु की मेज की स्थापना करते हैं। वह कहता है कि जब तक मैं अपने राज्य में रहूंगा, मैं इसे नहीं पीऊंगा। और निस्संदेह, बेल का फल उसके खून का प्रतीक बन जाता है, जो नई वाचा का खून है।

तो, ये और कई अन्य सिनॉटिक समानताएं, मैथ्यू में ये पाठ। हम पॉल के कई अन्य ग्रंथों में शराब के बारे में सोच सकते हैं, हम इसके विवरण में नहीं जाएंगे, लेकिन यह दिखाने का एक महत्वपूर्ण तरीका है कि भगवान अपने लोगों को कैसे आशीर्वाद दे सकते हैं यदि वे आज्ञाकारिता में उसका जवाब देते हैं। लेकिन साथ ही, ये ग्रंथ अक्सर इस बारे में बात करेंगे कि जब वे अवज्ञाकारी होते हैं तो भगवान इसराइल को कैसे आशीर्वाद नहीं देते हैं।

इसलिए, उनके पास कोई फसल नहीं है, उनके पास कोई अंगूर नहीं है, उनके पास कोई शराब नहीं है। हम यहां उन ग्रंथों के बारे में नहीं सुन रहे हैं या बात नहीं कर रहे हैं जो स्पष्ट रूप से शराब के दुरुपयोग के बारे में बताते हैं। हमारे पास पुराने नियम में ग्रंथ हैं, विशेष रूप से नीतिवचन की पुस्तक, जो हमें शराब के दुरुपयोग के खिलाफ चेतावनी देती है।

हमारे पास नए नियम में ऐसे पाठ हैं जो अत्यधिक शराब के सेवन के खतरों के बारे में बताते हैं। इफिसियों 5:18 जैसे पाठ हमें बताते हैं कि हम अपनी परिपूर्णता ईश्वर की आत्मा में खोजें, न कि शराब के सेवन में। इसलिए, हम बाइबल में शराब के नैतिक निहितार्थों को नज़रअंदाज करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम सिर्फ उस कल्पना को समझने की कोशिश कर रहे हैं जिसका उपयोग यीशु यहाँ कर रहे हैं, जो इसके चारों ओर घूमने वाले नैतिक मुद्दों की ओर इतना निर्देशित नहीं है।

इसलिए, बाइबल की दुनिया में और हमारी आधुनिक दुनिया में अंगूर के बागों की कुछ पृष्ठभूमि की गवाही हमें इसे बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकती है और हमें यह कल्पना करने में मदद कर सकती है कि या तो भगवान की आज्ञाकारिता में फलदायी होने या भगवान की अवज्ञा करके फलदायी न होने का क्या मतलब है। निःसंदेह, यीशु ही वह है जो परमेश्वर की अर्थव्यवस्था में सबसे अधिक फलदायी अंगूर का बाग है, और हम उसके माध्यम से अपनी फलवन्तता पाते हैं। तो, सेफ़ोरिस में, नाज़रेथ के ठीक पास, गलील से बहुत दूर नहीं, कुछ महान पुरातात्विक अवशेष हैं, और उनमें से एक सेफ़ोरिस में एक फर्श मोज़ेक में अंगूर के बगीचे में अंगूर की भरपूर फसल को दर्शाता है।

अगर आप इसराइल जाएंगे तो आपको कई ऐसी जगहें मिलेंगी जहां शराब के कोल्हू के अवशेष हैं। तो, अंगूरों को लताओं से लाया जाएगा और इन कुंडों में डाल दिया जाएगा जो पथर से काटे गए हैं, और उन्हें आम तौर पर रौंद दिया जाएगा, मुझे लगता है, उन पर चलने वाले लोगों द्वारा या

प्रक्रिया में मदद करने के लिए कुछ प्रकार के उपकरणों का उपयोग करके। और जैसा कि शराब है - तरल निचोड़ा हुआ है, आप इसे इस तस्वीर में बहुत अच्छी तरह से नहीं देख सकते हैं।

शायद यह स्थापना का यह हिस्सा है। द्रव दरार के माध्यम से नीचे बहता है। शायद यह इस दीवार के माध्यम से मूल रूप से एक पूरा बोर्ड रहा होगा, जिसे मूल रूप से एक कुंड में डाला गया होगा, और फिर कुंड से इसमें खालें भरी गई होंगी।

यह चित्र इसे थोड़ा बेहतर चित्रित करता है, और आप देख सकते हैं कि अंगूरों को कहाँ फेंक दिया गया होगा, कहाँ उन्हें कुचल दिया गया होगा। जाहिर तौर पर तरल पदार्थ यहां से गड्ढों में बह गया होगा, यहां भी, जहां तरल एकत्र हो गया होगा। आज इज़राइल में, हेफ़र घाटी में, यह तस्वीर तेल अवीव और हाइफ़ा के बीच तट के पास ली गई थी।

गोलान में, वे आज अंगूर भी उगा रहे हैं। मुझे यकीन नहीं है कि इस सज्जन को अंगूर कहां से मिले, लेकिन ऐसा लगता है कि यह कोई इजरायली किसान है जो अंगूर की गुणवत्ता की जांच कर रहा है। मैं मिशिगन में रहता हूँ, और यहाँ मिशिगन में शराब का बड़ा व्यवसाय है।

विशेषकर उत्तरी मिशिगन के कुछ खूबसूरत क्षेत्र, जहाँ अंगूर उगाये जाते हैं। यह मिशिगन में ट्रेवर्स सिटी के उत्तर में मिशन प्रायद्वीप पर पश्चिम ट्रेवर्स खाड़ी की ओर देखने वाला शैटो ग्रैंड ट्रेवर्स है। अंगूरों का क्लोज़अप.

आप देख सकते हैं कि वे पक्षियों को अंगूरों से दूर रखने के लिए वहां कुछ जाल फैला रहे हैं ताकि वे फसल के सभी अंगूरों का उपयोग कर सकें। वहाँ ऊपर एक और खूबसूरत अंगूर का बाग है जिसे चेटो चैटल कहा जाता है, और आप वहाँ अग्रभूमि में बेलें देख सकते हैं। उस अंगूर के बाग के मालिकों ने वास्तव में उस अध्याय को याद किया है जिसे हम अभी एक धातु की मूर्ति के साथ देख रहे हैं जो बेल और शाखाओं की एक मूर्ति है, और पाठ, निश्चित रूप से, उसी से संबंधित है।

ईसाई कलाकारों ने बेल और शाखाओं की बहुत सारी कल्पनाएँ बनाई हैं, और वे इस हद तक आगे बढ़ गए हैं कि प्रेरितों को बेल पर यीशु के साथ केंद्र में बिठाया गया है। हालाँकि, जैसे ही मैं इन्हें जोड़ रहा था, मुझे लगता है कि हमारे पास 12 से अधिक हैं। 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12.

मुझे लगता है कि हमारे पास वहां सिर्फ 12 हैं। हालाँकि, यह 12 से अधिक हैं, और मैं बिल्कुल निश्चित नहीं हूँ कि ये सभी लोग कौन हैं। 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15.

तो, मुझे नहीं पता कि इसमें क्या हो रहा है। चाहे हमारे पास मूसा और एलिय्याह हों, या चाहे हमारे पास न केवल 12 शून्य 1 से 11 होते हैं, लेकिन फिर हमारे पास मैथियास है, और हमारे पास पॉल है, इसलिए हो सकता है कि वे वहां शामिल हों, लेकिन वह केवल 13 हैं। तो, शायद हमें मिल गया है मूसा और एलिय्याह वहाँ अच्छे उपाय के लिए थे।

मुझे यकीन नहीं है। चित्रण काफी दिलचस्प है। मुझे लगता है कि इसमें, यदि हमने पुस्तक पर बेहतर संकल्प किया होता, तो यह एक ग्रीक पाठ है जिसमें वास्तव में है, एगो एमी हे एम्पेलोस, मैं बेल हूं।

एगो ईमी हे एम्पेलोस हे एलेथिन, असली बेल। हालाँकि, मुझे लगता है कि यह टुकड़ा इस बात की ओर इशारा करता है कि मरकर और अपना खून बहाकर यीशु नई वाचा का उद्घाटन करते हैं, जो रोटी और कप का प्रतीक है। तो, यह उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने से है कि दुनिया में जीवन आता है, विरोधाभासी रूप से।

तो, दाईं ओर का यह टुकड़ा, जिसका स्रोत मेरी समझ से परे है, मैं यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह मूल रूप से कहां प्रकाशित हुआ था, लेकिन ऐसा करने में सक्षम नहीं हूँ। संभवतः जब हमारा सामना बेल की कल्पना से होता है, तो एक प्रमुख प्रश्न जिसके बारे में हम लगातार सुनते हैं वह यह है कि इन सभी निष्फल शाखाओं के बारे में क्या? मेरा अनुमान है कि यह मानवता की प्रकृति और यहां तक कि ईसाइयों के बारे में भी कुछ दर्शाता है जो मानव हैं। हम इस बारे में चिंता करने में अधिक समय बिताते हैं कि अगर यह बुरी घटना घटित होती है तो क्या होगा, बजाय इसके कि हमें उस तरह का व्यक्ति बनना चाहिए ताकि ऐसा न हो।

लेकिन किसी भी घटना में, अध्याय 15 और श्लोक 6 में इस बारे में भारी मात्रा में अटकलें और चर्चा और व्याख्याएं और तर्क हैं कि निष्फल जली हुई शाखाएं कौन हैं। यहूदा के हाल ही में चले जाने के तत्काल संदर्भ में कोई सोच सकता है कि हमें क्या सोचना चाहिए यहूदा जैसे व्यक्ति के विषय में वह उस शाखा के समान है जो फल नहीं लाती, जो काट दी जाएगी और जला दी जाएगी। इंजील ईसाइयों के बीच, ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि वास्तविक ईसाई अंततः गिर सकते हैं और पीछे हट सकते हैं और शाश्वत दंड के अधीन हो सकते हैं। धर्मत्याग एक भयानक चीज़ है, ऐसी चीज़ जिस पर मैं कभी प्रकाश नहीं डालना चाहूँगा।

मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यह पाठ यही सिखा रहा है। मुझे लगता है कि यह मामला है कि वास्तविक शब्द से हमारा क्या मतलब है। मुझे लगता है कि चर्च में निश्चित रूप से ऐसे लोग हैं जो अपने मन में आश्वस्त हैं कि वे यीशु के सच्चे अनुयायी हैं।

वे सिर्फ पाखंडी नहीं हो रहे हैं। वे सिर्फ दिखावा करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। अपने मन में, वे सचमुच उसका अनुसरण कर रहे हैं।

इस अर्थ में, ऐसे लोग हैं जो कभी पूरे दिल से यीशु मसीह की सेवा कर रहे थे, जो पूरे दिल से उनके खिलाफ हो गए हैं। मुझे लगता है कि वास्तविक शब्द के उस अर्थ में, वास्तव में ऐसे लोग हैं जो पूर्व ईसाई थे जो अब ईसाई नहीं हैं, और यह पाठ शायद ऐसे ही लोगों का वर्णन कर रहा है। दूसरी ओर, ऐसे लोग भी हैं जो सोचते हैं कि वास्तविक ईसाई केवल वे ही हैं जिन्होंने पवित्र आत्मा का आंतरिक कार्य प्राप्त किया है।

केल्विनवादी प्रवृत्ति के लोग चुनाव के सिद्धांत के बारे में बोलेंगे और जो लोग मसीह के पास आए हैं उन्हें वह किसी भी तरह से बाहर नहीं निकालेगा। वह अपनी भेड़ों को जानता है, और कोई

उन्हें उसके पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। हमने हाल ही में जॉन 10 में पढ़ा, और मैं उस सिद्धांत के पक्ष में हूँ।

मेरी अपनी व्यक्तिगत धार्मिक पृष्ठभूमि और विश्वास वर्तमान में कैल्विनवादी है। हालाँकि, मुझे लगता है कि हमें इस तरह के पाठ को उस प्रकाश में देखने की ज़रूरत है जिसे हम दृढ़ता का सिद्धांत कह सकते हैं। मुझे लगता है कि सच्चे कैल्विनवादी और आर्मीनियाई इस बात से सहमत होंगे कि भगवान के लोग इसी तरह कार्य करते हैं और सच्चे ईसाई विश्वास में दृढ़ रहते हैं।

अन्यथा कहने का मतलब शायद शाश्वत सुरक्षा के सिद्धांत को पकड़ना है, लेकिन दृढ़ता के लिए किसी भी जिम्मेदारी के बिना शाश्वत सुरक्षा का सिद्धांत वास्तव में एंटीनोमियनिज्म का सिद्धांत है। तो, आज इंजीलवाद में यह समूह है जो इतना आश्वस्त है कि एक बार बचाया गया, हमेशा बचाया जाता है, चाहे कुछ भी हो, वे बने रहने के लिए कोई वास्तविक प्रेरणा लेते हैं क्योंकि आप भगवान की उपस्थिति में समाप्त होने जा रहे हैं, चाहे आप ऐसा करें या नहीं। मुझे नहीं लगता कि इसे किसी भी तरह से चर्च की ऐतिहासिक शिक्षा के रूप में समझा जाना चाहिए।

मुझे लगता है कि यह एक वास्तविक समस्या है। इसलिए, धर्मत्याग सबसे गंभीर तरीका है, और हम उन लोगों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जो विश्वास का सिर्फ एक सतही पेशा बनाते हैं, और फिर आप इस बारे में चिंता करते हैं कि क्या वे वास्तव में आस्तिक हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात हो रही है जो वास्तव में बेल के साथ, यीशु के साथ जुड़ा हुआ है, और जो फिर भी कोई फल नहीं लाता है।

इस तरह से लोगों को खुश करने की कोशिश करने और उनसे कहने की बजाय, चिंता मत करो, तुम ठीक हो जाओगे, भले ही तुम एक ईसाई हो, तुम एक ईसाई हो, हम चाहेंगे कि तुम और अधिक आध्यात्मिक बनो, लेकिन तुम 'यदि आप ठीक नहीं हैं तब भी आप ठीक हैं'। मुझे नहीं लगता कि अगर हम लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं तो हम देहाती तौर पर उन पर कोई एहसान कर रहे हैं। मुझे लगता है कि हमें गेंद उनके पाले में डालनी होगी और कहना होगा, आप जानते हैं, बाइबिल हमें बताती है कि बेल की शाखाओं के रूप में हमें फल देने चाहिए, और आपको यीशु के साथ अपने रिश्ते के बारे में और अधिक गंभीर होने की ज़रूरत है कि क्या आपके पास वास्तव में है संबंध।

इसलिए, यह मानवीय मानकों को स्थापित करने के कानूनी तरीके के बारे में नहीं है कि लोग या तो फिट बैठते हैं या नहीं, और हम उसी के आधार पर घोषणाएं करते हैं। यह बाइबिल की कल्पना को लोगों को याद दिलाने की बात है कि बेल, शाखाएं बेल से जीवन प्राप्त करती हैं, और पिता बेल और अंगूर के बगीचे की देखभाल कर रहा है, और अंगूर के बगीचे में लोग जो कोई वास्तविक अंगूर नहीं ला रहे हैं, बल्कि हैं शायद झाड़ियों और कांटों को सहते हुए, हम चर्च में नेताओं के रूप में ऐसे लोगों को सहला नहीं सकते हैं और उन्हें बता सकते हैं कि यह ठीक है, आप ठीक हो जाएंगे, भले ही आप कुछ भी आध्यात्मिक नहीं कर रहे हों। शायद आपको अधिक आध्यात्मिक चीजें करनी चाहिए, लेकिन आप ठीक रहेंगे।

यह कल्पना हमें ऐसा कुछ भी करने की अनुमति नहीं देती है, और यदि पुराने नियम का इतिहास और जिस तरह से यह दर्शाता है कि कैसे इसराइल को ईश्वर के प्रति वफादारी की कमी और उन पर आने वाली हर चीज के लिए न्याय किया गया था, तो हमारे पास कोई वास्तविक बाइबिल आधार नहीं है। लोगों को यह बताने के लिए कि एक बार बचाया गया, हमेशा बचाया जाएगा, चाहे कुछ भी हो जाए। चाहे समस्या कोई भी हो। आपको याद होगा कि हमारे पास एग्रेस डे का वह कार्टून था जो उस भेड़ के बारे में था जो कह रही थी कि मसीह के झुंड में रहना कितना अद्भुत है और कोई भी हमें उसके हाथ से नहीं छीन सकता, इसलिए अब चर्च या उस जैसी किसी चीज़ में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।

और फिर दूसरी भेड़ कहती है, ठीक है, मुझे लगता है कि तुम उसके हाथ से कूद रहे हो। ऐसा नहीं है कि कोई तुम्हें छीन रहा है, तुम बाहर छलांग लगा रहे हो। और इसलिए जॉन अध्याय 15 जैसा पाठ हमें इसकी याद दिलाता है, और मुझे लगता है कि अगर हम यहां की कल्पना को कमज़ोर करने की कोशिश करते हैं और इसे किसी ऐसी चीज़ में बदल देते हैं जो लोगों को भगवान के साथ अपने रिश्ते के बारे में लापरवाह होने की अनुमति देता है, तो हम गलती करते हैं।

इस परिच्छेद के बारे में हम एक और प्रश्न पूछ सकते हैं कि यीशु यहाँ पद 2, 4, 5, और 8 में जिस फल की बात कर रहे हैं उसका फल क्या है? इस पाठ में विशेष रूप से क्या चल रहा है? क्या वह नये धर्मांतरण कराने की बात कर रहा है? क्या वह वह फल है जिसके बारे में वह बात कर रहा है, नए धर्मान्तरित लोगों के अर्थ में सुसमाचार का फल? मुझे लगता है कि पॉल ने कुलुस्सियों में इस तरह से बात की थी, और मुझे लगता है कि यीशु भी इसी तरह की कल्पना का उपयोग कर रहे हैं, हालांकि बिल्कुल वही नहीं, जॉन अध्याय 4 में, जहां यदि आप चाहें, तो आत्माओं की फसल पृष्ठभूमि में है जब वह खेतों के बारे में बात करते हैं फसल काटने तक सफेद होना। तो, आपको बाइबल में फल मिलेगा जिसे कभी-कभी नए विश्वासियों के रूप में बोला जाता है, लेकिन मसीह-समान चरित्र के रूप में भी बोला जाता है। जॉन बैपटिस्ट ने उन लोगों से कहा जो बपतिस्मा के लिए उनके पास आ रहे थे ताकि वे अपने जीवन में धार्मिकता का फल पैदा कर सकें।

दूसरे शब्दों में, मुझे कुछ टोरा पालन दिखाओ। बाद में, प्रेरित पौलुस ने उन लोगों के बारे में बात की जो आत्मा के माध्यम से मसीह से संबंधित थे, जो आत्मा के फल को प्रकट करते थे, और इसका संबंध मसीह के समान चरित्र से है, जैसा कि आप जानते हैं, प्रेम, आनंद, शांति, सहनशीलता, आदि। तो, यीशु इस संदर्भ में क्या बात कर रहे थे? क्या वह यीशु के लिए आत्माओं को जीतने और प्रचार के तौर पर फलदायी होने की बात कर रहा था, या वह मसीह जैसे चरित्र की बात कर रहा था? और मैं आपको बताना चाहता हूं, मुझे लगता है कि इसका उत्तर निश्चित रूप से हां है।

वह हर उस चीज़ के बारे में बात कर रहा था जो हम एक ईसाई के रूप में करेंगे, न कि केवल एक या दूसरे के बारे में। यीशु ने इस प्रवचन में हमें सिखाया है कि मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते। इसलिए, यदि हम मसीह के अलावा कुछ भी नहीं कर सकते हैं, तो वह करने के लिए जिसे कहा जाएगा, मुझे लगता है, इसका तार्किक उलटा, हम उसके अलावा कुछ भी करने में सक्षम नहीं हैं, तो हम उसके साथ जो कुछ भी करेंगे वह उसी का फल होगा।

इसलिए, चाहे हम इसके बारे में मुख्य रूप से इंजीलवादी संदर्भ में या पवित्रीकरण या मसीह जैसे चरित्र के संदर्भ में सोचना चाहें, मुझे लगता है कि इसे एक या दूसरे तक सीमित करना एक गलती होगी, क्योंकि जो कुछ भी अच्छा होता है वह हमारे अंदर से निकलता है। मसीह के अनुयायी केवल उस सीमा तक ही आ सकते हैं जब हम उस पर और हमारे भीतर उसके कार्य पर निर्भर हों, फिर उससे जो कुछ भी उत्पन्न होता है उसे फल कहा जाना चाहिए। तो, मुझे लगता है कि यह एक ऐसी बहस है जो सीधे तौर पर थोड़ी मूर्खतापूर्ण है क्योंकि मसीह के अनुयायियों के रूप में हम जो कुछ भी करते हैं वह हमारे भीतर उनके कार्य का फल है। एक बहुत ही व्यावहारिक प्रश्न यह हो सकता है कि हम मसीह में कैसे बने रहें? मसीह में बने रहने, बने रहने के बारे में बात करना अच्छा है, तो हम ऐसा कैसे करें? यदि हम इसे एक चेकलिस्ट में बदल दें और कहें कि यदि आप यह करते हैं और आप यह करते हैं और आप यह करते हैं और आपने अपने सभी बक्सों की जांच कर ली है तो आप मसीह में अनुयायी हैं, तो हम शायद गलत हैं।

मैं इसके बजाय यह सोचूंगा कि जैसे बेल और शाखाएं जैविक रूप से जुड़ी हुई हैं और जब बारिश होती है और किसान बेलों की देखभाल कर रहा होता है, तो एक प्राकृतिक तरीका होता है जिससे पौधा फल पैदा करता है। तो, एक प्राकृतिक तरीका है जिसमें हम, विश्वास के माध्यम से मसीह में हैं और उसकी आत्मा हमारे जीवन में आती है और हमें नया जीवन देती है, कि हम स्वाभाविक रूप से उसकी सेवा में फलदायी होते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि जैसा कि आप इसके बारे में सोचते हैं, जाहिर है, बेल के साथ शाखाओं की जैविक एकता हमें आत्मा के माध्यम से मसीह के साथ हमारी एकता की बात करती है और हम केवल आत्मा के माध्यम से हमारे जीवन में फल देने के लिए मसीह पर निर्भर रहना चाहते हैं। .

तो, मुझे लगता है कि यह हमें सिखा रहा है कि हम निश्चित रूप से केवल अपने प्रयासों से, केवल अपने काम से, केवल सक्रिय रहने से फल प्राप्त नहीं करेंगे। जैसे ही हम मसीह पर निर्भरता में सक्रिय होंगे, हम फल देने जा रहे हैं। उससे स्वतंत्र नहीं, बल्कि उस पर निर्भरता।

इसलिए, यदि हम एक शाखा के रूप में मसीह पर निर्भर नहीं हैं तो यह निश्चित रूप से बेल से उसके संबंध और बेल की जड़ पर निर्भर करता है। यदि हम अपने जीवन के हर दिन स्वाभाविक रूप से नहीं रहते हैं, तो हमारी वापसी की स्थिति यह महसूस करना है कि जब तक हम उस दिन पूरी तरह से मसीह पर निर्भर नहीं होते, तब तक इससे कुछ भी अच्छा नहीं होने वाला है। मुझे नहीं लगता कि हम मसीह में बने रहेंगे।

लेकिन जैसा कि हम पढ़ते हैं कि प्रासंगिक सेटिंग में मसीह में बने रहने का क्या मतलब है, जहां यीशु मसीह में बने रहने के प्रकाश में प्रेम आदेश के बारे में बात करना शुरू करते हैं, यह आज्ञाकारिता के मामले पर आ जाता है। यदि हम ईश्वर की इच्छा और यीशु की शिक्षा को जानते हैं और हम इसकी उपेक्षा करना या इसकी अवज्ञा करना या इसके बारे में उदासीन होना चुनते हैं और वास्तव में यह नहीं सीखते हैं कि यीशु का अनुयायी होने का क्या मतलब है, तो हम वास्तव में उनका पालन नहीं कर रहे हैं। और मसीह की आज्ञाओं का पालन करने के अलावा, हम वास्तव में प्यार के बारे में बात नहीं कर सकते हैं जैसा कि जॉन कहते हैं।

आज हम अक्सर सुनते हैं कि हमारी वर्तमान संस्कृति में लोग इस बारे में बात करते हैं कि वे ईश्वर से कितना प्यार करते हैं, लेकिन उन्हें उसकी आज्ञाओं में कोई दिलचस्पी नहीं है। और जो लोग शायद कभी-कभी आज्ञाकारिता के बारे में बात करते हैं वे कभी भी प्रेम के बारे में बहुत अधिक बात नहीं करते हैं। इस प्रकार की चीज़ को जॉन के धर्मशास्त्र से कायम नहीं रखा जा सकता है जैसा कि हम यहाँ अध्याय 15, श्लोक 10 में देखते हैं।

पद 9 में वह कहता है, जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा। मेरे प्यार में रहो या रहो. यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को मानकर उसके प्रेम में बना रहा हूँ।

इसलिए, यह केवल हमारे लिए ईश्वर के प्रेम में बने रहने की बात नहीं है कि वह जो कहता है उसे करें। यीशु ने कहा कि मैंने बिल्कुल यही किया है। इसलिए, जब तक हम आदेशों का पालन करने की बात नहीं करते तब तक हम प्रेम के बारे में बात नहीं कर सकते।

हम आदेशों का पालन करने के बारे में तब तक बात नहीं कर सकते जब तक हम स्वयं को धर्मग्रंथ की सच्चाई को समझने के लिए प्रयास नहीं करते। इसलिए, यदि हम बाइबल के विद्यार्थी नहीं हैं और यह नहीं समझते हैं कि यीशु हमें क्या करना सिखा रहे हैं, तो प्रेम के बारे में बात करना व्यर्थ है और हम प्रेम को कितना महसूस करते हैं या हम अन्य लोगों के साथ प्रेम का कितना बखान करते हैं या हम ईश्वर के प्रति कितना प्रेम महसूस करते हैं हमसे प्यार करता था. यदि हमारा मन यीशु की शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देता है, तो हम उसका अनुसरण नहीं कर पाएंगे जो हमारा पिता हमसे चाहता है, जितना वह होता यदि उसने अपने जीवन में ईश्वर की इच्छा पर ध्यान नहीं दिया होता।

इसलिए जैसे यीशु आत्मा पर निर्भर थे, जैसे यीशु ने हर बात में पिता की आज्ञा का पालन किया, हमें उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हर बात में उनकी आज्ञा माननी चाहिए और उनका अनुसरण करना चाहिए और जानना चाहिए कि वह क्या कहते हैं और ईश्वर को और अधिक पूरी तरह से प्यार करना है क्योंकि हम ईश्वर को जानते हैं उसकी आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करके। तो फिर, मसीह का आज्ञापालन न केवल निर्भरता का मामला है, जो हमारे जीवन में आत्मा के कार्य की बात करता है, बल्कि यह उसकी आज्ञापालन की भी बात करता है, जो बाइबल का अध्ययन करने में हमारे कार्य की बात करता है। तो, आप ऐसे लोगों को जानते होंगे जो आत्मा पर निर्भर होने के बारे में बहुत बात करते हैं।

आप ऐसे लोगों को जानते होंगे जो बाइबल पढ़ने और उसका अध्ययन करने के बारे में बहुत बात करते हैं। हमारे लिए पूरी तरह से मसीह में बने रहने या बने रहने के लिए, निश्चित रूप से, हम आत्मा के आंतरिक कार्य के माध्यम से विश्वास में बने रहेंगे, लेकिन यह एक आंतरिक कार्य होगा जो काफी हद तक इस बात से योग्य है कि हम कितना सीख रहे हैं उनके शब्दों में भगवान के बारे में। जॉन के धर्मशास्त्र में कुछ अंतिम प्रमुख विषय जिनके बारे में हमें सोचने और अध्याय में ध्यान देने की आवश्यकता है, वह प्रेम और आज्ञाकारिता का संबंध होगा।

हम बस इसी बारे में बात कर रहे हैं, कि आज्ञाकारिता के अलावा ईश्वर के प्रति प्रेम और प्रेम के अलावा आज्ञाकारिता के बारे में बात करना व्यर्थ है। इस सामग्री में हमारे पास नफरत के रूप में उत्पीड़न के बारे में बहुत गंभीर शब्द हैं जो पूरी तरह से अनुचित हैं। इसलिए, यदि यीशु से हमारे संबंध के कारण दुनिया हमसे नफरत करती है, तो यह वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है जो हमने किया है या उसने किया है।

यह अकारण घृणा है, और इसलिए यदि हम यीशु के अनुयायी हैं तो हमें इसे स्वीकार करना होगा। जो आता है वह उसका हिस्सा है। हमारे यहाँ, स्पष्टतः, आत्मा और यीशु के बारे में शिक्षण चल रहा है।

हम पिछले वीडियो में इसके बारे में पहले ही काफी कुछ बता चुके हैं। अंत में, उत्पीड़न की वास्तविकता, सहायक के काम पर यहां उत्पीड़न की स्थिति के अर्थ में जोर दिया गया है जहां दुनिया बिल्कुल भी हमारी तरफ नहीं है बल्कि हमारे खिलाफ काम कर रही है। हम आश्चर्य हो सकते हैं कि पवित्र आत्मा दुनिया को दोषी ठहराएगा।

जिस तरह यीशु ने नीकुदेमुस से हवा की तरह बहने वाली आत्मा के बारे में बात की थी जिसे प्रोग्राम नहीं किया जा सकता है, ठीक उसी तरह जैसे यीशु ने अध्याय 6 में तथाकथित जीवन की रोटी प्रवचन में लोगों से कहा था कि आत्मा उन शब्दों के माध्यम से काम कर रही है जो उसने बोले थे, और जैसे यीशु हमें यहाँ सिखाते रहते हैं कि उत्पीड़न के समय में भी आत्मा हमें सभी सत्य का मार्गदर्शन करेगा, आत्मा का कार्य वहाँ बहुत मजबूत तरीके से बना हुआ है। तो, फिर हम यूहन्ना अध्याय 15 में, अंततः, केवल शाखाएँ होने के इस मामले के साथ रह गए हैं। मुझे लगता है कि हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हम समझें कि एक शाखा का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक वह बेल से न जुड़ी हो।

बेल का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक कि उसे किसान से खेती न मिल रही हो। तो, क्या यह एक खूबसूरत तस्वीर नहीं है कि हम कैसे प्रभु यीशु पर निर्भर हैं, पवित्र आत्मा पर निर्भर हैं, परमपिता परमेश्वर पर निर्भर हैं जो अपनी सारी योजना और अपने सारे आशीर्वाद के माध्यम से हमारे लिए काम करता है? तो, आइए बस यह ध्यान रखें कि यीशु के अनुयायियों के रूप में, इस छवि में, हम केवल शाखाएँ हैं।

हम जड़ नहीं हैं और हम फल नहीं हैं। हम वह माध्यम हैं जिसके माध्यम से जब हम ईश्वर की देखभाल और आत्मा के माध्यम से यीशु से प्राप्त जीवन से संबंधित होते हैं, तो यह एक सुंदर चीज है और फल उत्पन्न किया जा सकता है। लेकिन सबसे पहले, हमें खुद को याद दिलाना होगा कि हम केवल शाखाएँ हैं।

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, विदाई प्रवचन, मसीह में बने रहना और दुनिया के प्रति गवाही देना। यूहन्ना 15:1-16:15.